समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Thursday, 24 September 2026

पहली बार ऐसा शतक : बिहार मे 100+ सीटों पर NDA ने 2 हजार वोटों की नहीं, बल्कि 20,000+ वोटों की बढ़त से जीता — इतिहास रचा गया

Publisher

Published on 15 Nov 2025

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 ने सिर्फ सीटों का युद्ध ही नहीं दिखाया, बल्कि वोटों के अंतर की गहराइयों में भी एक नया अध्याय लिखा है। इस बार NDA (राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन) ने न सिर्फ अधिकांश सीटें जीतीं, बल्कि 118 सीटों पर वह 20,000 से अधिक वोटों की बढ़त से विजयी हुआ है — एक ऐसा रिकॉर्ड, जो पिछले चुनावों की अपेक्षाओं और परंपराओं को तोड़ता है।

नतीजों के मुताबिक, कुल 243 सीटों वाली विधानसभा में NDA को भारी बहुमत मिला है, और इसकी जीत की कहानी में वोटों का अंतर एक अहम किरदार रहा है। पिछले विधानसभा चुनावों में, जब यह दूरी कुछ सीटों तक सीमित थी, तब यह राजनीति में एक संतुलन का पैमाना माना जाता था। लेकिन इस बार NDA ने पूरे 118 विधानसभाओं में अपनी दबदबा दिखाया, जहां उनका मतदाता आधार सिर्फ जीतने तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि लोगों ने बड़े बहुमत के साथ उन्हें समर्थन दिया।

विश्लेषकों के अनुसार, यह आंकड़ा सिर्फ चुनावी जीत का नहीं, बल्कि जनता के स्पष्ट जनादेश का साक्ष्य है। उन सीटों पर जहां एनडीए की जीत 20,000 से अधिक मतों की रही, वहां मतदाताओं ने अपनी आवाज़ को प्रत्यक्ष और मकसदपूर्ण तरीके से इस्तेमाल किया है। यह संख्या महागठबंधन की संभावित चुनौती और उसकी रणनीतिक गहराई को भी झकझोरती है, क्योंकि विपक्ष को सिर्फ हारे हुए गढ़ों में नहीं, उन इलाकों में भी करारी हार मिली है जहाँ वोट बैंक मजबूत माना जाता था।

अगर पिछले विधानसभा चुनावों की बात करें, तो 2020 में एनडीए ने करीब 39 सीटों पर 20,000 से अधिक वोटों के अंतर से जीत हासिल की थी। उस समय यह संख्या उसकी मजबूत जड़ें दिखाती थी, लेकिन संपूरक गठबंधन की शक्ति को नाकाफी भी समझा जाता था। वहीं, महागठबंधन ने उसी तरह की दूरी में लगभग 40 सीटें जीती थीं, जो संकेत था कि विपक्ष भी कुछ इलाके में व्यापक समर्थन बटोर पा रहा था। लेकिन इस बार सब कुछ बदल गया है: इस चुनाव में महागठबंधन को केवल चार सीटों पर ही इतनी बड़ी हार झेलनी पड़ी, जबकि अन्य प्रतिद्वंद्वियों को भी इस विशाल अंतर की मार का सामना करना पड़ा।

यह चुनाव इसलिए भी ऐतिहासिक है क्योंकि यह दिखाता है कि बिहार का मतदाता सिर्फ नारा-चियाँ, पार्टी-ब्रांड या नेतृत्व के नाम पर वोट नहीं कर रहा था, बल्कि उसने ठोस पैमाने पर अपनी उम्मीदों को मतदान में बदल दिया है। यह वोटिंग पैटर्न संकेत दे रहा है कि जनता देशी मुद्दों — विकास, कल्याण, कानून-व्यवस्था और स्थिरता — पर अधिक भरोसा कर रही है और सरकार बनाने की जिम्मेदारी भी उसी दिशा में देख रही है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह आंकड़ा एनडीए की रणनीति की सफलता का प्रमाण है। गठबंधन ने बूथ-स्तर पर व्यापक संगठन तैयार किया, मध्यम और सीमांत मतदाताओं को बेहतर तरीके से जोड़ने की ओर ध्यान दिया और अपने विकास-एजेंडे को जमीन पर भी अच्छी तरह से संप्रेषित किया। विशेष रूप से, उन्होंने ऐसी सीटों पर काम किया जहां पिछले चुनावों में मुकाबला कड़ा था, और वहां उन्होंने "मजबूत जीत" हासिल की — न कि सिर्फ नजदीकी मुकाबले में।

इस नई तस्वीर के बीच, महागठबंधन और विपक्ष की चुनौतियाँ और भी बढ़ गई हैं। सिर्फ हार का सामना करना ही नहीं पड़ा है, बल्कि उन सीटों पर भी उनकी स्वीकार्यता कमतर हुई है जहाँ कभी उन्हें भरोसेमंद वोट बैंक माना जाता था। विपक्ष को अब यह सोचने की जरूरत है कि सिर्फ प्रचार-रैलियों और नारों से काम नहीं चलेगा, बल्कि उसे गहराई में जाकर अपनी रणनीति, संगठन और संवाद को फिर से आकार देना होगा।

समाप्ति में कहा जा सकता है कि बिहार चुनाव 2025 ने एक नए राजनीतिक गणित की नींव रखी है। NDA की यह जीत सिर्फ बहुमत की नहीं — वह "विश्वास का बहुमत" है, जो बड़ी अंतर से आया है। और यह अंतर शायद आने वाले समय में राजनीति की दिशा, गठबंधन-रणनीति और जनता-सरकार रिश्ते दोनों के लिए मिसाल बन जाए। Samacharwani पाठकों के लिए यह आंकड़ा एक साफ संदेश है: बिहार ने सिर्फ चुना नहीं, महाशक्ति से चुना।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.